Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2017: 5.068, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL, JUNE-JULY, 2019, VOL- 7/34

वंचित वर्ग के अभिभावकों की शिक्षा से जुड़ी अपेक्षाओं एवं चुनौतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

भरत कुमार पंडा[1], Ph. D. & कुमारी यशवन्ती यादव[2]

[1]सहायक प्राध्यापक, म. गं. अं. हिं. वि. वि. वर्धा (महाराष्ट्र)

[2]पीएच.डी(शोध छात्र), म. गं. अं. हिं. वि. वि. वर्धा (महाराष्ट्र)

Abstract

शिक्षा किसी भी समाज के सर्वांगीण विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपागम होती है। किसी भी वर्ग समुदाय, समाज अथवा राष्ट्र के विकास के लिए सबसे पहली सीढ़ी शिक्षा ही होती है। जिसके द्वारा व्यक्ति दीनता, दासता, गरीबी, और अज्ञानता से मुक्ति प्राप्त कर सके। शिक्षा विकास और समाज का आपस मे घनिष्ठ संबंध होता है। समाज के प्रत्येक वर्ग के अभिभावक अपनी सामाजिक आर्थिक परिवेश के अनुसार शिक्षा से अपेक्षाए रखते है , हर व्यक्ति की अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि परिस्थिति, समाज,समय एवं आवश्यकताओं के बदलते परिदृश्य के आधार पर शिक्षा से अपेक्षाए भी अलग-अलग है जैसे की शिक्षित होकर आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करे, समाज में सम्मान जनक स्थान प्राप्त हो शिक्षा से अपने वर्तमान जीवन को समृद्ध बनाना चाहते है। शिक्षा मानव जीवन का सबसे आवश्यक संस्कार , सामाजिक परिवर्तन का आधार और आर्थिक उन्नति का एक सशक्त साधन है । अतः मूलभूत सुविधायों से वंचित, विकास की मुख्य धारा से भटके वर्गों को शिक्षा की सुलभता एवं शैक्षिक अपेक्षाओं की पूर्ती हेतु सरकार द्वारा विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन उपरांत भी पूर्णतया सफलता न मिलपाने से विभिन्न चुनौतियों की ओर ध्यान केंद्रित होता है । प्रकृत शोध मे उक्त चुनौतियों को उजागर करने का प्रयास किया गया है ।

Keywords - *वंचितवर्ग, शैक्षिक अपेक्षाएँ, चुनौतियाँ*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

वंचित एक ऐसा रूढ शब्द है, जिसको शब्द की सीमाओं से परिभाषित नहीं किया जा सकता है। शब्द की उत्पति के आधार पर देखा जाय तो वंचित का अर्थ है किसी व्यक्ति से कोई वस्तु छीन लेना या उसे किसी अधिकार से बेदखल कर देना। सूक्ष्म रूप से देखा जाय तो समाज में ऐसा वर्ग जो आधुनिक मूलभूत सुविधाओं से अब तक दूर है ,उसे वंचित कहा जा सकता है। लेकिन शैक्षिक दृष्टिकोण से देखा जाय तो समाज का ऐसा वर्ग जिसे शिक्षा प्राप्त करने का पर्याप्त अवसर नहीं मिला या मिला भी तो वह उस अवसर का लाभ नहीं उठा सका, वंचित कहा जा सकता है। शैक्षिक अवसर का प्राप्त न होना या इसका लाभ न उठा पाने का कारण पारिवारिक, सामाजिक तथा आर्थिक हो सकता है। उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि ऐसी हो सकती है जो शिक्षा के प्रति जागरूक न हो।

वंचित वर्ग को शिक्षा से दूर करने में आर्थिक स्थिति भी एक प्रमुख कारण है। आर्थिक रूप से पिछड़े लोग सामाजिक अवसरो की समानता का लाभ नही उठा पाते हैं। अतः समाज का यह कर्तव्य है कि शिक्षा के माध्यम से ऐसे लोगों को विकास के समान

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अवसर प्रदान करे। शिक्षा एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा सामाजिक व्यवस्था को श्रेष्ठ स्वरूप प्रदान किया जा सकता है। शिक्षा ही समाज के एक दूसरे व्यक्ति में राष्ट्रीय चेतना का भाव उत्पन करती है। दूसरे शब्दो में शिक्षा लोकतांत्रीकीकरण की ऐसी प्रक्रिया है जिसका लक्ष्य समाज में समता लाना और विभिन्न वर्गों एवं समुदायों के बीच सामाजिक भेद भाव को मिटाना है। शिक्षा मानव जीवन का सबसे आवश्यक संस्कार , सामाजिक परिवर्तन का आधार और आर्थिक उन्नति का एक सशक्त साधन है। शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करने वाले घटकों मे छात्र , शिक्षक एवं अभिभावक मुख्य घटक हैं। शिक्षा और समाज का आपस मे बहुत घनिष्ठ संबंध होता है शिक्षा व्यवस्था किसी सामाजिक व्यवस्था का अभिन्न अंग होती है। शिक्षा किसी समाज का कितना सार्थक विकास कर पाएगी ये समाज मे रहने वाले नागरिक के ऊपर निर्भर करता है , क्योंकि शिक्षा सामाजिक स्थितियों से बहुत गहरे रूप मे जुड़ी होती है तथा सामाजिक रूपान्तरण में शिक्षा की केंद्रीय भूमिका होती है। शिक्षा समाज मे उचित स्थान पाने का एक सशक्त माध्यम है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति अपने सामाजिक दायित्वों का निर्धारण करता है। वर्तमान सामाजिक परिस्थिति में जो व्यक्ति आर्थिक रूप से सम्पन्न है वही सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित भी है। अतः यह कहना गलत न होगा कि आज भी वंचित वर्ग के अभिभावकों में अपने बच्चों के शिक्षा के प्रति यही अभिलाषा विद्यमान है कि उनके बच्चे शिक्षा से आर्थिक रूप से सशक्त बनें। आज का सामाजिक वातावरण इस प्रकार का हो गया है कि समाज के सभी वर्ग चाहे उच्च वर्ग हो , मध्यम वर्ग हो, निम्न वर्ग या वंचित वर्ग हो सभी अपने बच्चों की शिक्षा से यही आकांक्षा रखते हैं कि हमारा बच्चा शिक्षा के द्वारा एक संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक बनकर अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति अपने स्वयं का हित भी समर्पित करे। शिक्षा किसी भी समाज वर्ग, समुदाय अथवा राष्ट्र के विकास का सबसे महत्वपूर्ण उपागम होता है। सरकार द्वारा वंचित वर्ग के लोगों को शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित करने के लिए अनेक कार्यक्रम चलाये जा रहे है जैसे सर्व शिक्षा अभियान ,महिला समाख्या योजना,राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के तहत आपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना, शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 ,जनशाला कार्यक्रम आदि। परंतु विगत 70 वर्षो में अपेक्षाकृत फल नही मिल पाया अर्थात वंचित वर्गों के अपेक्षाओं की पूर्ति हेतु किया गया प्रयास के सामने वि द्यमान चुनौतियाँ अवश्य इसके कारण होते है। अतःअपेक्षायों के समक्ष चुनौतियों का विश्लेषण किया जाना सांप्रतिक आवश्यक है। शिक्षा एक ऐसा संसाधन है जों देश के अधिकांश लोगों को सामाजिक आर्थिक स्थितियों में बदलाव ला सकता है।

शोध प्रश्न-

1. वंचित वर्ग के अभिभावकों की शिक्षा से जुड़ी क्या अपेक्षए है।
2. वंचित वर्ग के अभिभावकों को अपने पाल्यों को शिक्षा प्रदान करने के लिए किस प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ता है।

शोध उद्देश्य-

1 . वंचित वर्ग के अभिभावकों का शिक्षा से अपेक्षाओं का अध्ययन करना।

2 . वंचित वर्ग के अभिभावकों का शिक्षा में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

समस्या कथन-

"वंचित वर्ग के अभिभावकों की शिक्षा से अपेक्षाएं एवं चुनौतियों का अध्ययन"

पारिभाषिक शब्दावली

वंचित वर्ग- वंचित वर्ग सामान्य अर्थों में वंचित वर्ग से आशय समाज के ऐसे लोगों से है , जो अब तक विकास की मुख्य धारा से अलग है ।विशेष अर्थों में वंचित वर्ग से आशय समाज के ऐसे लोगों से है आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े हैं।

उपकरण-

वंचित वर्ग के अभिभावकों का शिक्षा से अपेक्षाए एवं चुनौतियों का अध्ययन करने के लिए शोधकर्ता के द्वारा स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया गया ।

समस्या का सीमांकन-

प्रस्तुत लघु शोध को सुगमता और क्रमबद्धता प्रदान करने के लिए शोधकर्ता ने निम्नांकित सीमांकन किए हैं-

1. यह अध्ययन उत्तर प्रदेश राज्य के देवरिया जिला के बरहज ब्लाक के अंतर्गत तक सीमित है ।
2. वर्तमान अध्ययन में निम्न उच्च प्राथमिक कक्षा तक के विद्यार्थियों तक सीमित है ।
3. वर्तमान शोध में केवल न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है ।

शोध विधि - प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यायदर्श- प्रस्तुत अध्ययन में न्यदर्श के रूप में देवरिया जिले में बरहज ब्लाक के आठ विद्यालयों को चुना गया ।इन विद्यालयों का चयन साधारण यादृच्छिक न्यदर्श के रूप में लिया गया ।

विश्लेषण-

प्रथम उद्देश्य की पूर्ति हेतु साक्षात्कार अनुसूची के प्रथम चार प्रश्न एवं द्वितीय उद्देश्य की पूर्ति हेतु शेष दो प्रश्न उद्दि ष्ट है एवं इनका विश्लेषण उक्त अनुसार अधोलिखित है ।

प्रश्नष-:1आप अपने बच्चोंर को विद्यालय क्यों् भेजते हैं

उक्त प्रश्न के उत्तर के रूप में 33% अभिभावकों ने बताया कि जो समस्या हमारे सामने आ रही है वह हमारे बच्चों को न हो । उसी प्रकार 16% अभिभावकों ने बताया की कि अपने दैनिक कार्यों को सफलतापूर्वक करने के लिए । 9.9% बच्चेो कुछ जान जाएंगे इस लिए । जबकि 6.6% पढ़ लिख कर अच्छाद बनने के लिए परन्तु 33%अभिभावकों ने बताया की पढ़ने के लिए । उपरोक्त अभिभावकों के उक्त प्रतिक्रियाओं से यहा विश्लेषण किया जा सकता है की सभी अभिभावक शिक्षा के माध्यम से अपने बच्चों को समर्थ जीवन के प्रति कुशल बनाने की अपेक्षा रखी है । परन्तु 33% अभिभावक का मानना है कि उनकी समस्याये उनके संतानों के जीवन में न आए इसी अपेक्षा को प्रदर्शित करती है । अर्थात शिक्षा से जीवन की समस्या का समाधान हो सकती है इसी अपेक्षा को प्रदर्शित करती है ।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रश्नg-2 आप के अनुसार शिक्षा का अर्थ क्याi है?

उक्त प्रश्न के उत्तर के रूप में 33% अभिभावकों ने बताए ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार सीखना। 16.5% ने बताया कि शिक्षा से व्यतक्ति को सही दिशा में मार्गदर्शन होता है। 16.5% पढ़ लिख कर कुछ जान जाना। तथा 16.5%ज्ञान प्राप्त करना बताए है। जिनका विश्लेकषण सेयह कहा जा सकता है कि अभिभावकों ने शिक्षा के विभिन्न पहलूयों को समझा तो है , तथा शिक्षा के विभिन्न कार्य के बारे में अवगत है। इससे विश्लेषित किया जा सकता है कि शिक्षा के विभिन्न पहलू के बारे में अभिभावक ज्ञात है। एवं शिक्षा के मार्गिक अर्थ को अभिभावक ने समझे है, जिससे उनकी पलयों के शिक्षा के प्रति अभिभावकों का उद्देश्य सामाजिक तौर पर योग्य, ग्राहय, श्रेष्ठ बनने कि अपेक्षा को व्यक्त करती है।

प्रश्न -3: शिक्षा से आप की क्याब अपेक्षाएँ है

प्रश्नानुसार प्रदतों के विश्लेषण से 33% अभिभावकों का मानना है कि पढ़े-लिखे कर गरीबी दूर करेगा। 16.5% अभिभावकों का मानना था कि पढ़-लिख कर नौकरी प्राप्त3 करना। इसी संदर्भ में 9.9 % पढ़-लिख कर कुछ बन जाए। 16.5 % अभिभावकों का मानना था कि मान सम्माकन मिलेगा रोजी-रोटी की समस्याक नहीं होगी16.5%पढ़ लिख कर नौकरी पाना और परिवार की देख भाल करना। तथा 6.6% पढ़-लिखकर मेरे बच्चेह कुछ बन जाए तथा नाम रोशन करे। उक्त प्रश्न के प्रदतों का विश्लेषण करने से शिक्षा से अविभावकों की जो प्रमुख अपेक्षाए प्रदर्शित होती है जिसमे पहला आर्थिक स्वतन्त्रता दूसरा सामाजिक प्रतिष्ठा लगभग इसी से ऊपर अभिभावकों ने भिन्न –भिन्न उत्तरों के द्वारा शिक्षा से आर्थिक स्वतन्त्रता की अपेक्षा रखी है। साथ ही साथ सामाजिक प्रतिष्ठा के भी अपेक्षा को प्रदर्शित किये है।

प्रश्न्-4 : आप के अनुसार शिक्षा कैसी होनी चाहिए?

प्रश्नो के विश्लेषण आधार पर 33% शिक्षा से बच्चेक होशियार होते हैं तथा आगे बढ़ते है3% ने बताया कि शिक्षा के द्वारा रोजगार मिलना चाहिए तथा 16.5%शिक्षा व्यकवस्थाे को और अधिक अनुशासित बनाया जाना चाहिए शिक्षा उद्देश्यगपूर्ण होना चाहिए तथा 16.5% अभिभावकों ने कहा कि शिक्षा से ज्ञान मिले तथा शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे बच्चोंक को काम धंधा आसानी से मिल जाए। उक्त प्रदतों से ज्ञात होता है की अभिभावकों के सामने शिक्षा अर्थकरी बने यह अपेक्षा एवं चुनौती भी है प्रायः अभिभावक वर्तमान शिक्षा का रोजगारक्षम समार्थ्य को सबसे बड़ी चुनौती मानते है सभी अभिभावकों ने भिन्न –भिन्न उत्तरों के द्वारा शिक्षा को निश्चित रोजगार की दृष्टि से चुनौती के रूप मे स्वीकार किया।

प्रश्नत5 : आपको अपने बच्चेे के विद्यालयी शिक्षा के दौरान कोई चुनौतियाँ आयी है हाँ, नहीं यदि हाँ तो कौन-कौन सी?

प्रदतों के विश्लेषण से पाया गया कि 33% अभिभावकों ने कहा कि आर्थिक समस्याे है23.1% बताया कि घर का आर्थिक आय कम होने के कारण हम बच्चों को निजी विद्यालय में नहीं भेज सकते। 33% विद्यालय घर से दूर है, बच्चेत पढ़ने न जाकर रास्तेम में से ही लौट आते हैं या खेलने लगते है । 9.9% अशिक्षित होने की समस्यार शिक्षित होते तो बच्चों का होमवर्क कराते। उपरोक्तन विश्लेलषण से यहज्ञात होता है कि आर्थिक चुनौती सबसे अधिक प्रभावित करती है तथा अविभावकों ने स्वयं की अशिक्षित को चुनौती के रूप में स्वीकार करते है। यह उनकी एवं सरकारी विद्यालयों की शिक्षा व्यवस्था की भी चुनौती है। उनके शैक्षिक

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आकांक्षाओं के सामने यह एक बड़ी चुनौती के रूप में प्रदर्शित करती है। विद्यालय की अनुउपल्बधता की चुनौती के रूप में भी 33 %लोगो ने भी रेखांकित किया है।

प्रश्नष-6 : शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रम के बारे में आप को जानकारी है?

प्रदतों के विश्लेषण से आधार पर16.5% सरकार वंचित वर्ग के बच्चो को निःशुल्क शिक्षा देती है। 6.6% जो बच्चे बीच में स्कूल छोड़ देते है, सरकार यह प्रयास कर रही है कि वे बच्चे फिर से स्कूल जा सके । 9.9 %सरकार व्यावसायिक पाठ्यक्रमों मे वंचित वर्ग के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देती है।तथा 16.5% सरकार शिक्षा को प्रोत्साहित करने के किए सर्व शिक्षा अभियान चलाई है। 16.5% सरकार बच्चों को किताबें और छात्रवृति देती है। तथा 33% सरकार बच्चों को दोपहर का मध्यान भोजन देती है। इस प्रश्न के उत्तर से यह प्रदर्शित होता है कि इस वर्ग के सामने शिक्षा को संचालित करने कि सबसे बड़ी चुनौती शैक्षिक योजना को जानने से है सरकार कि निः शुल्क शिक्षा व्यवस्था ,सर्व शिक्षा अभियान,छात्रवृति व्यवस्था एवं आर . टी . ई . के प्रावधानो की जानकारी न होना सबसे बड़ी चुनौती है।

निष्कर्ष - प्रथम उद्देश्य के आधार पर यह पाया गया कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा से अपेक्षाए रखते है लेकिन ये लोग शिक्षा को अपनी समस्यायों से मुक्ति पाने तथा अपने वर्तमान जीवन में जो समस्याए इन्हे हो रही है , अशिक्षित होने के कारण यह उनके पाल्यों के जीवन में न आए। इसी प्रकार ये आर्थिक , सामाजिक, एवं बौद्धिक, की अपेक्षाए शिक्षा से रखते है। द्वितीय उद्देश्य के प्राप्ति हेतु किया गया प्रदत्त विश्लेषण से पाया गया की शिक्षा ग्रहण करने में इन्हे विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिसमे भौगोलिक तथा आर्थिक समस्याए प्रमुख है। इन लोगों कि शिक्षा कि स्थिति आजादी से पूर्व भी दयनीय थी और आजादी के बाद सरकार द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से इन्हे शिक्षित एवं जागरूक होने का प्रयास किया जा रहा है फिर भी इन सभी कार्यक्रमों के बाद भी इन की शैक्षिक स्थिति दयनीय है।

परामर्श –विद्यालयों में चलाये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों शिक्षा का अधिकार अधिनियम (2009) , सर्व शिक्षा अभियान एवं छात्रवृति योजनायों के प्रति पाल्यों की समझ विकसित करनी होगी। प्रशासन के लिए शिक्षकों एवं पाल्यों दोनों की जागरूकता से संबंधित प्रशासन द्वारा जो भी योजनाए प्रारम्भ की जाती है वह कितना सफल हुआ तथा वंचित वर्ग के अभिभावकों पर कितना सकारात्मक प्रभाव प्रशासन द्वारा समय-समय पर इसका मूल्याकन करना चाहिए। वंचित वर्ग के पाल्यों को शिक्षक तथा बच्चों के निरंतर संपर्क में रहना तथा समय-समय पर विद्यालय शिक्षकों से स्वपाल्यों के बारे में जानकारी लेते रहना चाहिए। जिससे उनकी क्षमता, स्तर, योग्यता आदि से संबंधित जानकारियां मिल पाएगीं।

संदर्भ गन्र्थ सूची

*Education portal http://www.mp.rte *
http//www.wisdomblow.com/?p=1239
http://\barwa.blogspot, in/2015/blog-post.html Retrieved data
http://educationuou.blogspot.in\2015\01
http://www.indiaspendhindi.com/cover-story

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

https:/archve.indi/gov.in/hindi/sectors/education/edu scheduled castes .
https:\\pibnia.wordpress.com\2017\08
https:\\www.hrw .org\news 2014\04\22\253438
अनुसूचित जाति और जंजातियों के लिए शिक्षा , (नवोदय विद्यालय).
अमेरिकी आर्थिक समीक्षा. (1964). स्त्रोत: इंडियन एक्सप्रेस, द हिन्दू एवं टाइम्स ऑफ इंडिया.
आहूजा , राम (2012) ।सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण . आगरा :अग्रवाल पब्लिकेशन
कपिल , एच .के .(2012).अनुसंधान विधियाँ , आगरा :राखी प्रकाशन
गुप्ता , एस .पी .(2004).शिक्षा का समाजशास्त्रीय आधार, इलाहबाद :वसुंधरा प्रकाशन
चारु , बाहरी .(2016) ।वंचित जातियो की शिक्षा में आरक्षण करता है मदत .
जोशी , जे .के .(2017).आर्थिक एवं सामाजिक रूप से वंचित विद्यार्थियों के लिए शिक्षा की चुनौतियाँ .
तनेजा, शिवानी .(2013).शिक्षा का उद्देश्य शहरी वंचित समुदायों के संदर्भ में .मुस्कान :(अंक 34)
फोकस समूह का आधार पत्र – नई दिल्ली अनुसूचित जाति और जंजातीय के बच्चों की समस्याएँ
फोकस समूह का आधार पत्र –नई दिल्ली :राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
बजोरिया , जय श्री . (2014 भारत :हाशिए पर रह रहे बच्चों को शिक्षा से वंचित करना ,
बैरवा , अल.आर .(2016).वंचित समाज में सुधार ,
मनोज, मनोहर ।(2015) .वंचित वर्ग को आरक्षण से नही सशक्तिकरण से फायदा .
माथुर , एस .के.(2002)भारतीय शिक्षा का ऐतिहास , आगरा :एच .पी.भार्गव बुक डिपो
मिश्र , सन्त कुमार .(2012).भारतीय समाज में शिक्षा का विकास .मेरठ :आर लाल बुक डिपो .
लाल , रमन बिहारी .(2014) ।भारतीय शिक्षा का इतिहास , विकास एवं समस्याएँ मेरठ :आर .लाल बुक डिपो
वंचित समूह और कमजोर वर्ग के बच्चों का प्रायवेट स्कूलों की प्रथम कक्षा में निः शुल्क प्रवेश की व्यवस्था
शर्मा , नीलमणि (2010) ।आधे भारत का संघर्ष . नई दिल्ली :संजीव प्रकाशन
सिंह , अरुणकुमार (2002).मनोविज्ञान , समाजशात्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ वाराणसी :मोतीलाल बनरसीदास
सिंह, गया .(2013).भारतीय समाज में शिक्षा .मेरठ :आर .लाल बुक डिपो .
सिंह, डॉ. बी.जी. (2014). भारत में शिक्षा का अधिकार एवं प्रारम्भिक शिक्षा. इलाहाबाद.
सुलेमान , मुहम्मद .डाक्टर (2007)उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान , दिल्ली :मोतीलाल बनारसीदा.

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies